घोड़े पर सवार हीरो

कासिमिर पुलास्की

की कहानी

डेविड आर. कोलिन्स

चित्र: लैरी नोल्टे

घोड़े पर सवार हीरो

कासिमिर पुलास्की की कहानी

कासिमिर पुलास्की का जन्म 4 मार्च, 1747 को पोलैंड में हुआ था. यह बहुत समय पहले की बात है, लेकिन वो अभी भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं. घोड़े पर सवार एक विशेषज्ञ सैनिक, कासिमिर ने अमेरिकियों को अमेरिकी क्रांति जीतने में मदद करने के लिए अपने कौशल और बुद्धि का उपयोग किया.

रूसी आक्रमण से अपनी मातृभूमि की रक्षा करने का प्रयास करने के बाद वो अमेरिका गए. कासिमिर ने अपने पिता की सेना, "नाइट्स ऑफ़ द होली क्रॉस" में लड़ाई लड़ी. युद्ध में अपने पिता और भाई की मृत्यु के बाद, कासिमिर फ्रांस भाग गए, लेकिन वहां उन्हें पोलैंड के लिए एक नई सेना जुटाने में मदद करने वाला कोई नहीं मिला.

कासिमिर ने उपनिवेशों में क्रांति के बारे में सुना और फिर वो फ्रांस में अमेरिकी राजदूत बेंजामिन फ्रैंकलिन से मिले. उन्होंने फ्रैंकलिन से कहा कि वो आजादी के लिए लड़ना चाहते थे - इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वो उनका देश था या नहीं. इसलिए, फ्रैंकलिन ने उसे जनरल जॉर्ज वाशिंगटन के पास भेज दिया.

कासिमिर ने जिन अमेरिकी सैनिकों को प्रशिक्षित किया, वे बहुत चतुर और लड़ाकू सैनिक बने. उन्होंने घोड़े पर सवार होकर आश्चर्यजनक हमले किए और अंग्रेजों का बहादुरी से मुकाबला किया. कासिमिर और उसके सैनिकों ने कई लड़ाइयाँ जीतने में मदद की.

जॉर्जिया के सवाना में एक हमले का नेतृत्व करते समय कासिमिर को गोली लगी. 14 अक्टूबर 1779 को उनकी मृत्यु हो गई, लेकिन उन्होंने युद्ध का रुख मोड़ने में मदद की. कासिमिर पुलास्की एक साहसी सैनिक थे, जिन्हें जनरल वाशिंगटन ने एक सच्चे नायक के रूप में मान्यता दी थी.

कासिमिर पुलास्की की महत्वपूर्ण तिथियाँ

1747 4 मार्च को पोलैंड में जन्म

1752-1764 विनियारी और वारसॉ, पोलैंड में स्कूल में पढ़ाई की

1767 "नाइट्स द होली क्रॉस" आर्मी में शामिल हुए

1767-1772 रूस के विरुद्ध पोलैंड के लिए लड़े

1774 फ्रांस में कैद

1777 मई में अमेरिका के लिए रवाना हुए

1777 सितम्बर में अमेरिकी घुड़सवार सेना के प्रमुख नियुक्त किये गये

1779 युद्ध में घायल होने के कारण 11 अक्टूबर को मृत्यु हुई

घोड़े पर सवार हीरो

कासिमिर पुलास्की

की कहानी

डेविड आर. कोलिन्स

चित्र: लैरी नोल्टे
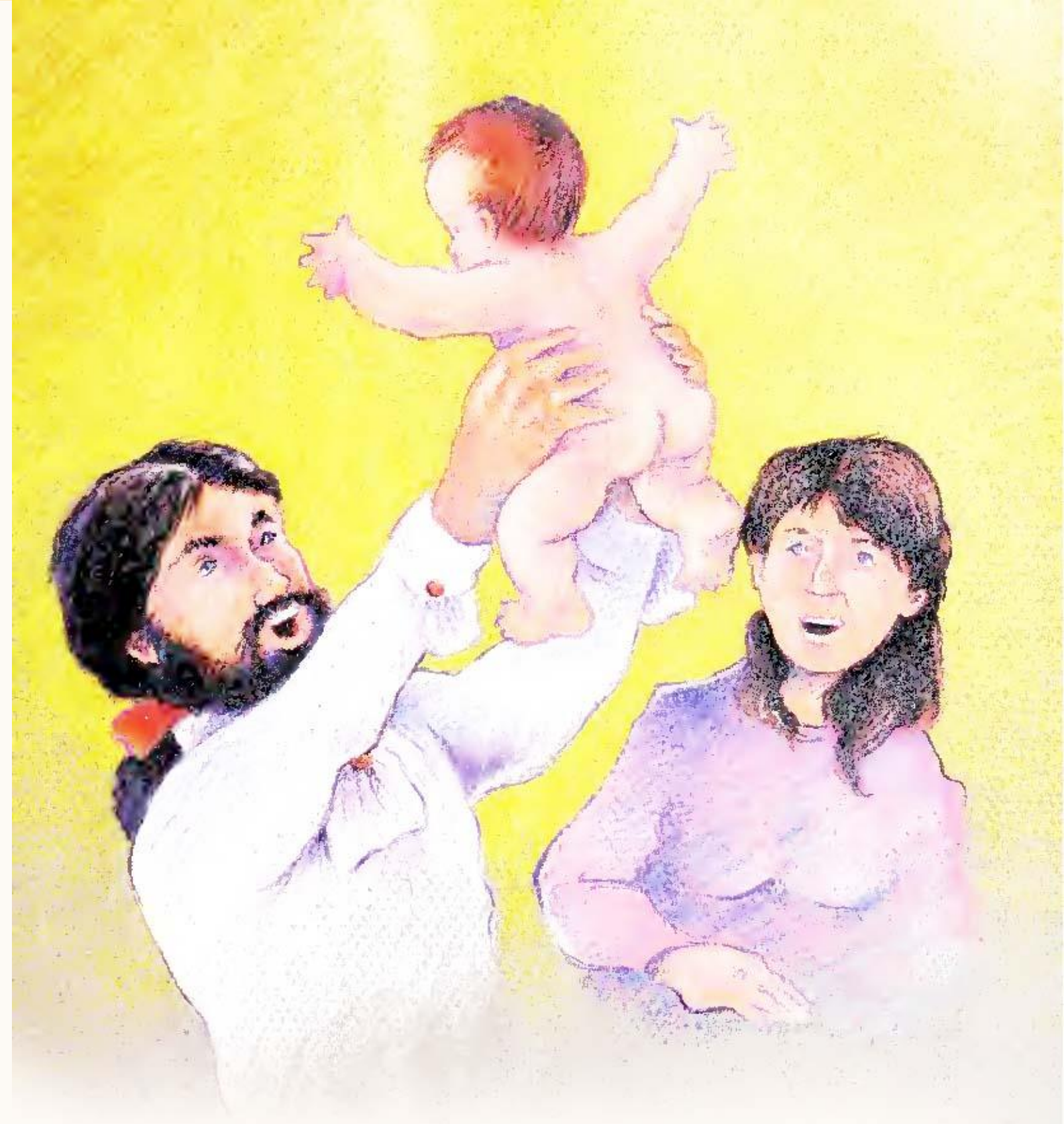
युवा कासिमिर पुलास्की कभी शांत नहीं बैठ सकता था. लोग कहते कि वो अपने जन्म के समय से ही हिलता-डुलता था. उसका जन्म 4 मार्च, 1747 को हुआ था.

युवा कासिमिर अपने पिता की गोद में बैठकर हिल रहा था. जोसेफ पुलास्की पोलैंड के एक अमीर वकील थे. हर दिन लोग कासिमिर के पिता से सलाह लेने आते थे.

जब कासिमिर अपनी माँ के पास बैठा तो भी वो हिलता था. मैरिएन पुलास्की हर दिन अपने बेटे को पढ़ाती थीं. माँ अपने बेटे का लिए पियानो भी बजाती थीं.

"तुम ईश्वर की संतान, पोलैंड के पुत्र और पुलास्की हो." युवा कासिमिर ने ये शब्द अक्सर सुने थे. लड़का जानता था कि उससे लोगों की बहुत अपेक्षा थी.

कासिमिर ने स्कूल में पढ़ने की बहुत कोशिश की. उसके लिए यह काम आसान नहीं था. वो अपनी लकड़ी की स्कूल बेंच पर बैठकर भी खूब हिलता-डुलता था.
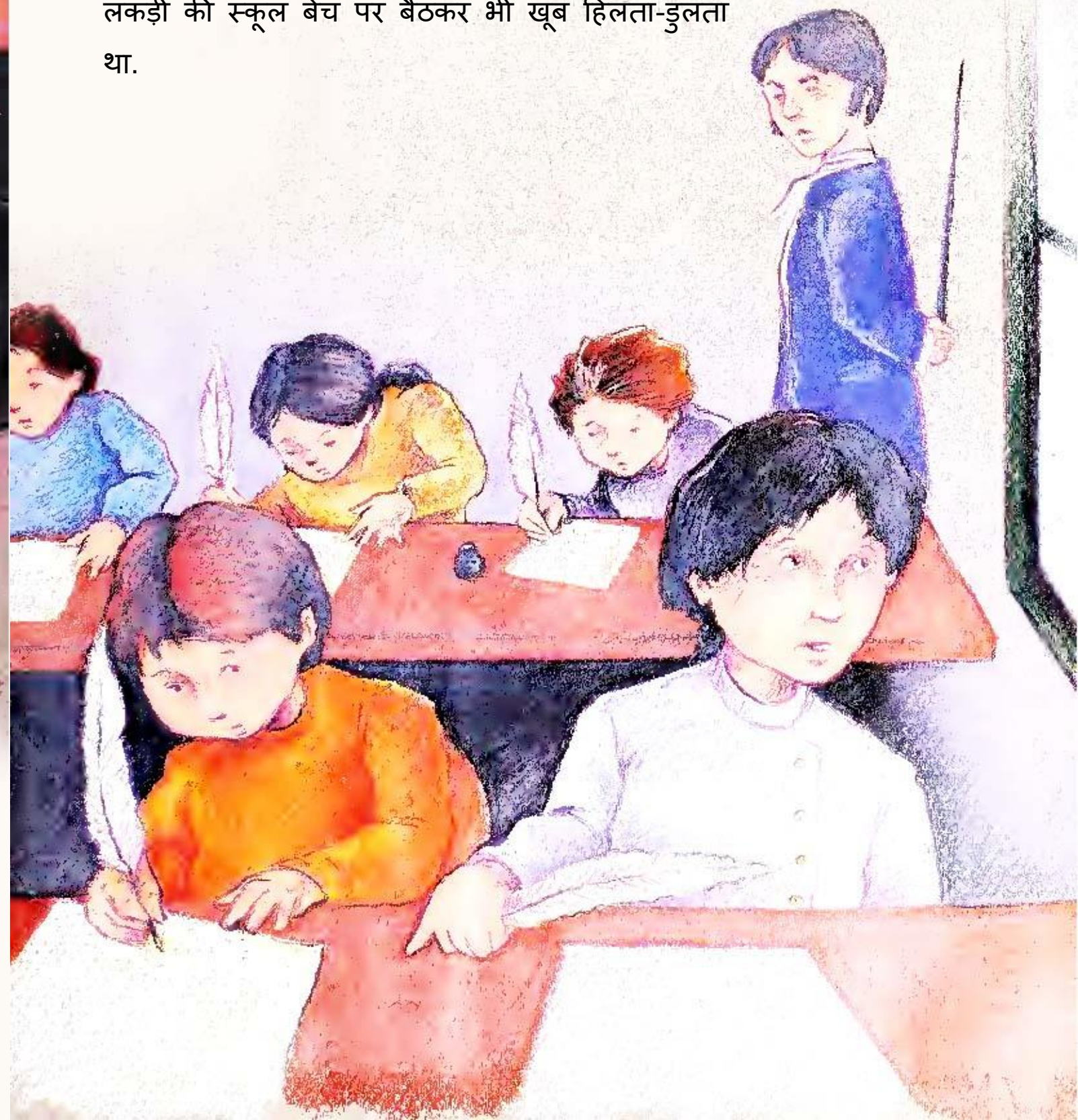
लेकिन जब वो घुड़सवारी करता था तो वो कभी भी हिलता नहीं था. कासिमिर ने घुड़सवारी तेजी से सीखी. अस्तबल की देखभाल करने वाले माइकल ने उसे घुड़सवारी सिखाई.

कासिमिर ने घोड़े पर कैसे चढ़ना-उतरना है वो सीखा. उसने शुरू करना और कैसे रुकना सीखा. उसने गोल चक्कर लगाना और कूदना भी सीखा.

कासिमिर और उसके दोस्तों ने घोड़े पर सवार होकर युद्ध के खेल, खेले. उन्होंने लकड़ी के भाले बनाए और उनसे खंभों पर टंगे सेबों पर निशाना लगाया. सवारी के दौरान उन्होंने बंदूक चलाना सीखा. कासिमिर के पिता ने कहा, "मुझे उम्मीद है कि युद्ध हमेशा तुम्हारे लिए सिर्फ एक खेल रहेगा."
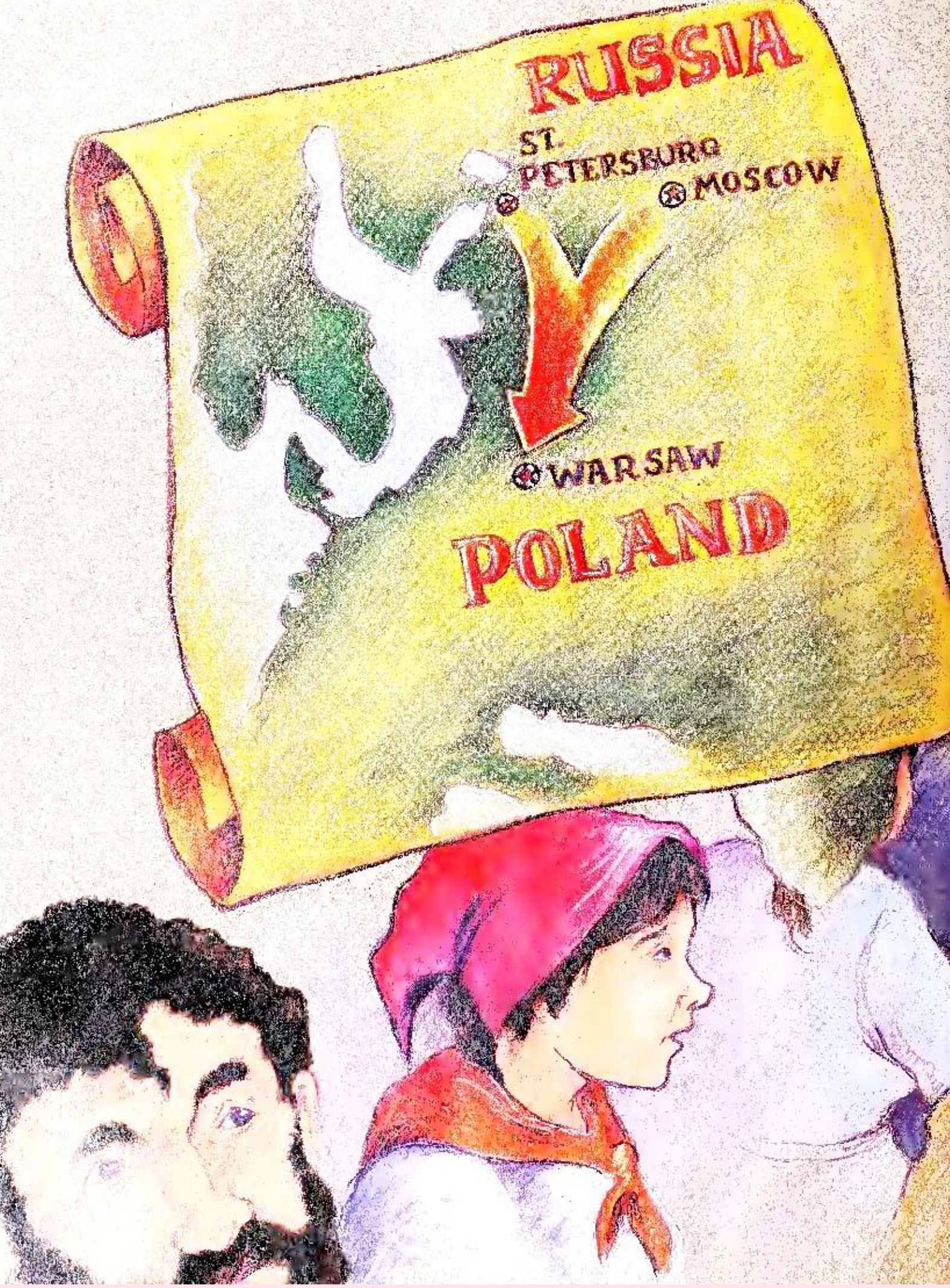
पोलैंड को मुक्त कराएं
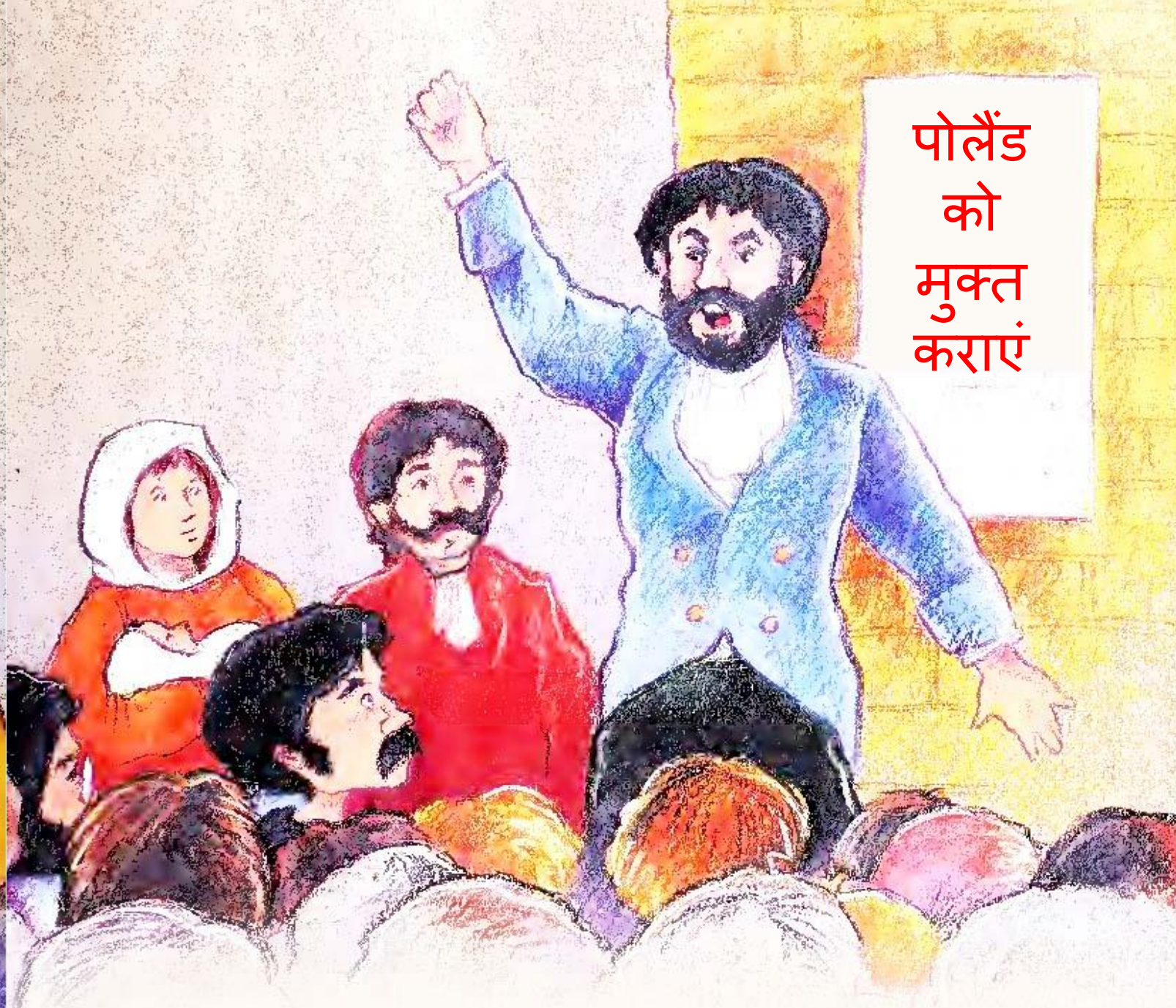
1767 में रूसी सैनिक पोलैंड में घुस गये. रूसी, पोलैंड की समृद्ध कृषि भूमि चाहते थे. पोलैंड का राजा रूसियों को रोक नहीं पाया.

"हमें एक स्वतंत्र देश होना चाहिए!" जोसेफ पुलास्की ने कहा. लेकिन अधिकांश पोलिश लोग अपने धंधों में लगे रहे. फिर बहुत सारे रूसी सैनिकों ने पोलैंड में मार्च किया.

जोसेफ पुलास्की ने एक सेना खड़ी की. उन्होंने अपने सैनिकों को "नाइट्स ऑफ द होली क्रॉस" कहा. "हम इस देश को आज़ाद रखने के लिए लड़ेंगे!" बहादुर वकील ने कहा.

बीस वर्षीय कासिमिर पुलास्की अपने पिता की सेना में शामिल हो गए. उन्होंने लोगों को घुड़सवारी और निशानेबाजी करना सिखाया. "कोई भी युवा पुलास्की की तरह सवारी और शूटिंग नहीं कर सकता है," सभी लोगों ने कहा.

कासिमिर को अपना कौशल दिखाने के खूब मौके मिले. उसने पूरे पोलैंड में अपने सैनिकों का नेतृत्व किया. उन्होंने पहाड़ियों और मैदान पर रूसियों से लड़ाई की. उन्होंने जंगलों और किलों में रूसियों से लड़ाई की. "कासिमिर पुलास्की एक बहादुर सैनिक है," लोगों ने कहा.
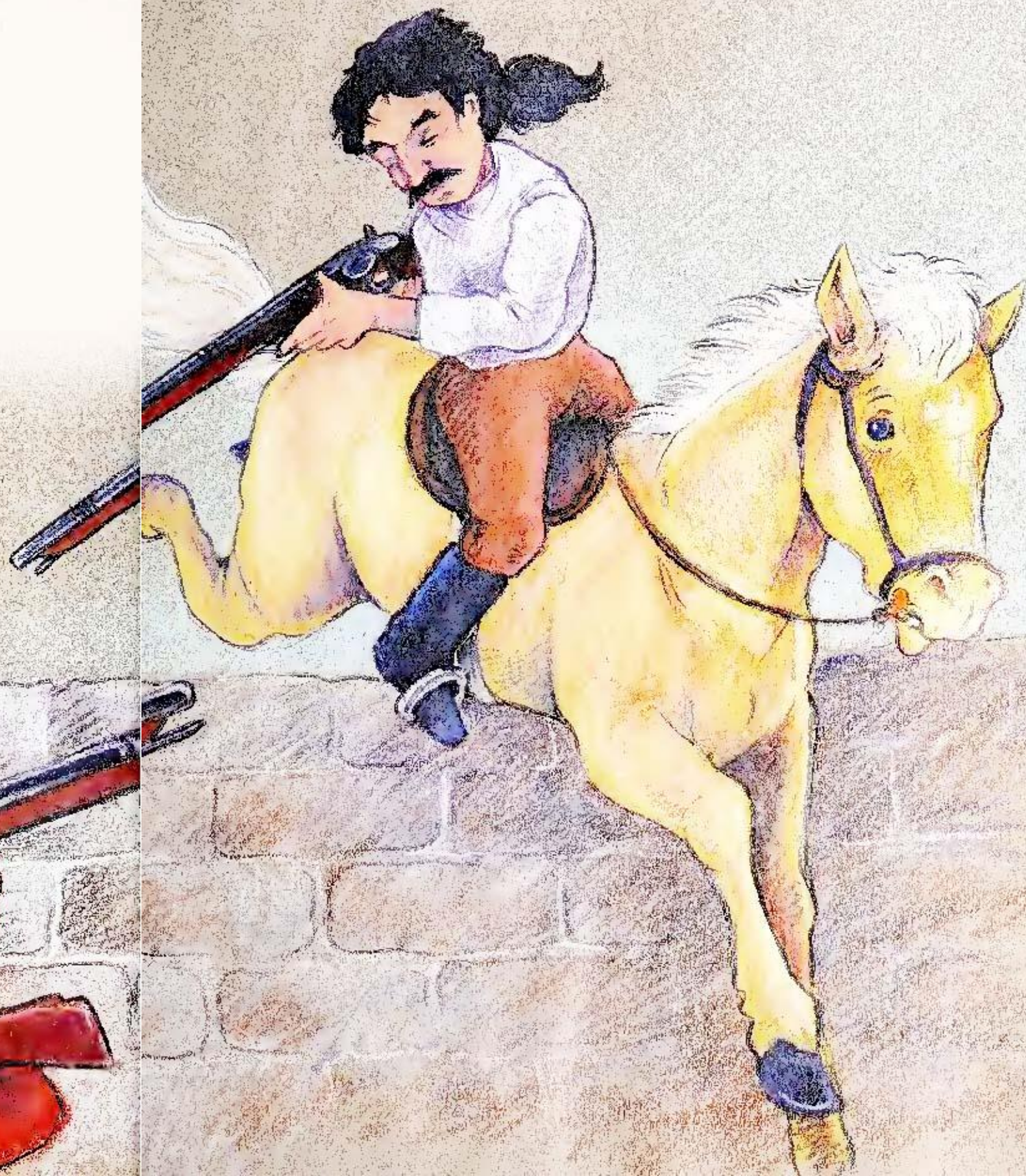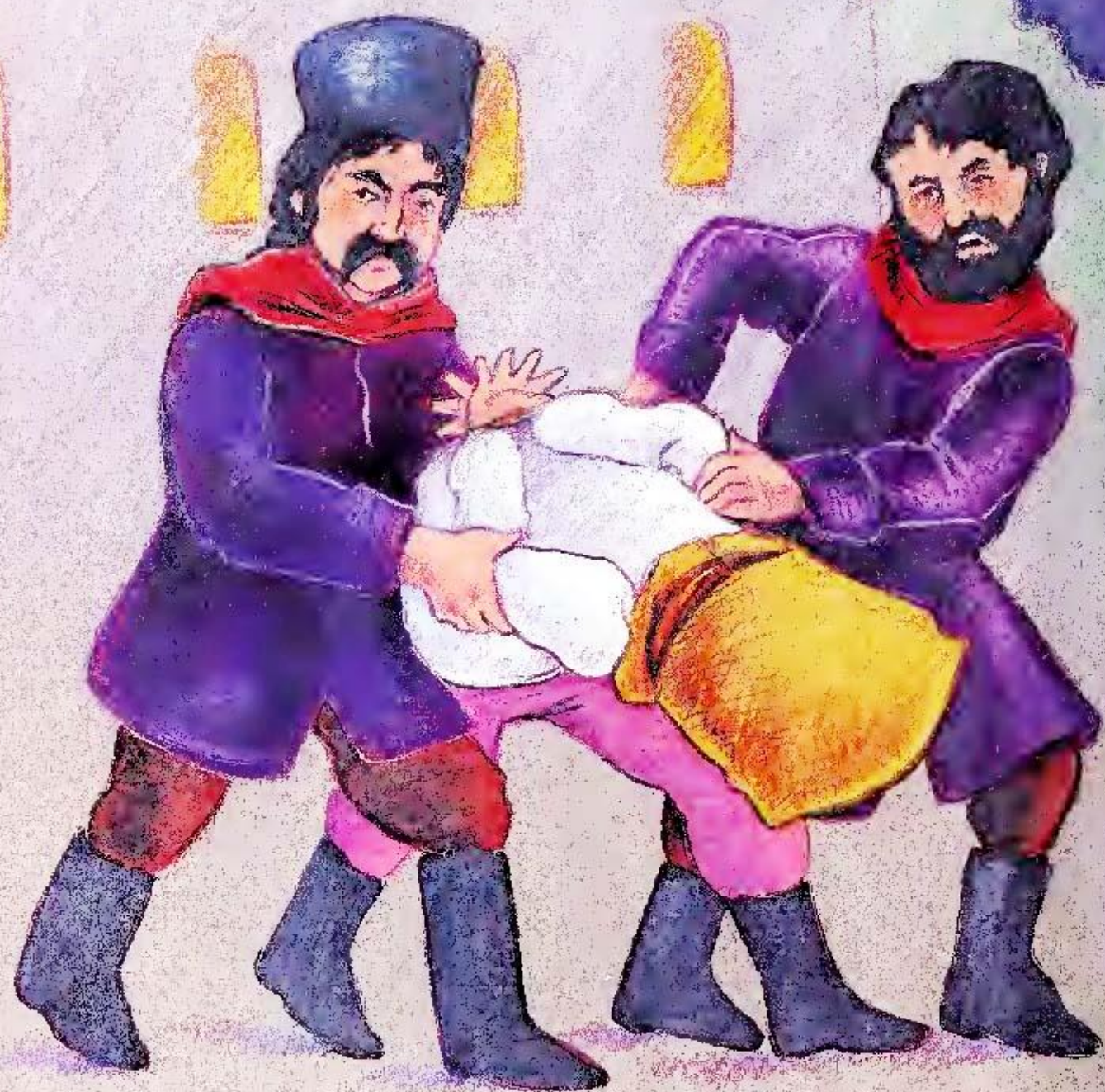
एक रात रूसियों ने एक गंदी चाल चली. उन्होंने पोलैंड के राजा का अपहरण कर लिया. फिर रूसियों ने उसका दोष कासिमिर पुलस्की पर लगाया! पोलैंड के राजा अपने अपहरणकर्ताओं का नाम नहीं बता सके क्योंकि उस समय बहुत अंधेरा था. फिर भी रूसियों ने कहा कि वो काम कासिमिर का ही था. कुछ लोगों को यह सुनकर आश्चर्य हुआ.

और अधिक रूसी सैनिक पोलैंड में आये. कासिमिर ने यथासंभव कड़ा संघर्ष किया. अक्सर, रूसी सैनिकों की संख्या अधिक होती थी. फिर भी कासिमिर ने कई लड़ाइयाँ जीतीं.

कासिमिर के पिता को गिरफ्तार कर लिया गया और जेल में उनकी मृत्यु हो गई. कासिमिर का भाई युद्ध में मारा गया. कासिमिर को अपने ही देश से भागने के लिए मजबूर होना पड़ा.

कासिमिर एक देश से दूसरे देश गए. उन्होंने धन जुटाने की कोशिश की ताकि वो एक नई सेना शुरू कर सके. लेकिन किसी ने उनकी कोई मदद नहीं की.

फ़्रांस में कासिमिर के पैसे ख़त्म हो गए. कर्ज न चुका पाने के कारण पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया. उन्होंने कासिमिर को जेल में डाल दिया.

जब वो जेल में थे, तब कासिमिर ने एक और युद्ध के बारे में सुना, ब्रिटिश सैनिक समुद्र के पार अमेरिकी सैनिकों से लड़ रहे थे. वो बिल्कुल वैसा ही था जैसे रूसियों और पोलिश के बीच का युद्ध.

जेल से बाहर आने के बाद कासिमिर, बेंजामिन फ्रैंकलिन से मिलने गए. फ्रैंकलिन, फ्रांस में अमेरिकी राजदूत थे. कासिमिर ने कहा, "मैं अमेरिकियों की ब्रिटिश को हारने में मदद करना चाहता हूं."
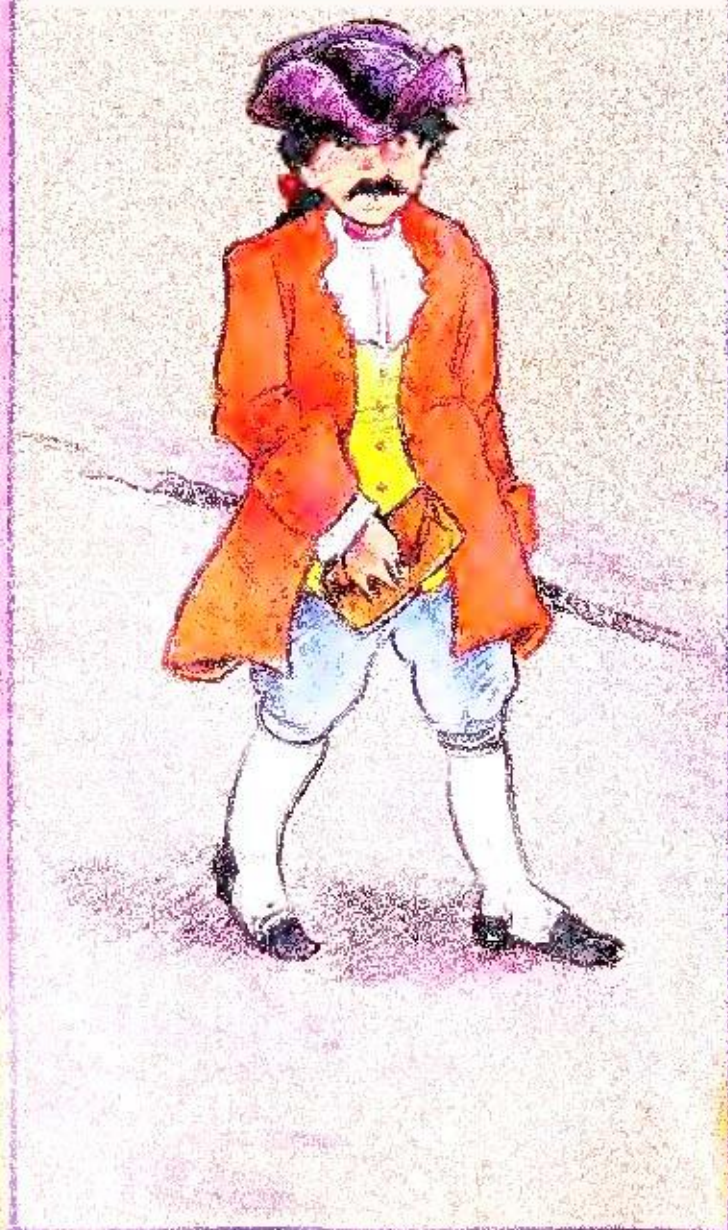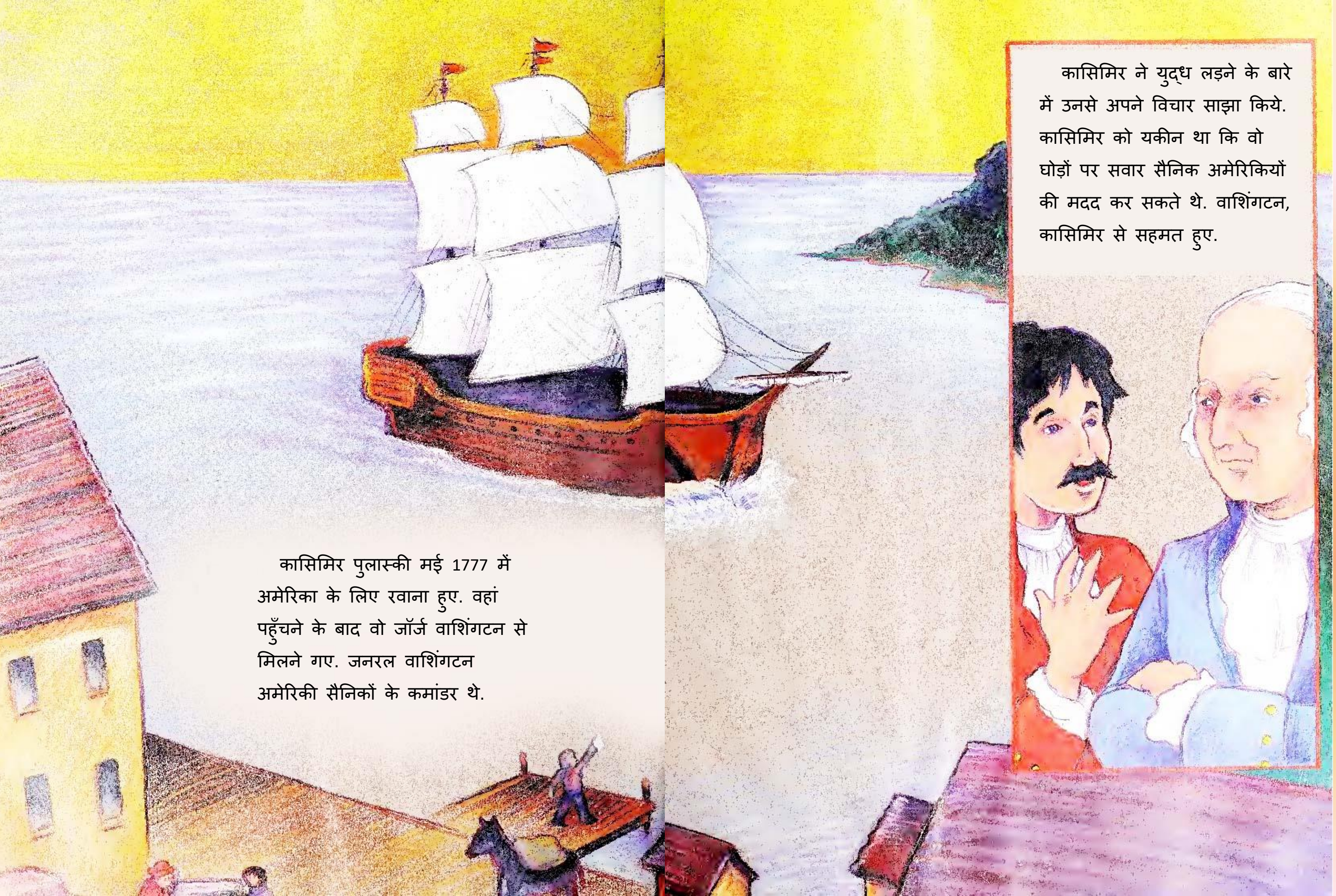
"लेकिन अमेरिका तुम्हारा देश नहीं है," फ्रैंकलिन ने कासिमिर से कहा.

"मुझे पता है," कासिमिर ने उत्तर दिया. "मैं सिर्फ एक देश के लिए नहीं बल्कि आज़ादी के लिए लड़ना चाहता हूँ."

बेंजामिन फ्रैंकलिन मुस्कुराए. "मैं तुम्हें अमेरिका में जॉर्ज वॉशिंगटन के पास भेजूंगा. मुझे लगता है कि वो तुम्हारा बेहतर इस्तेमाल कर सकेंगे."
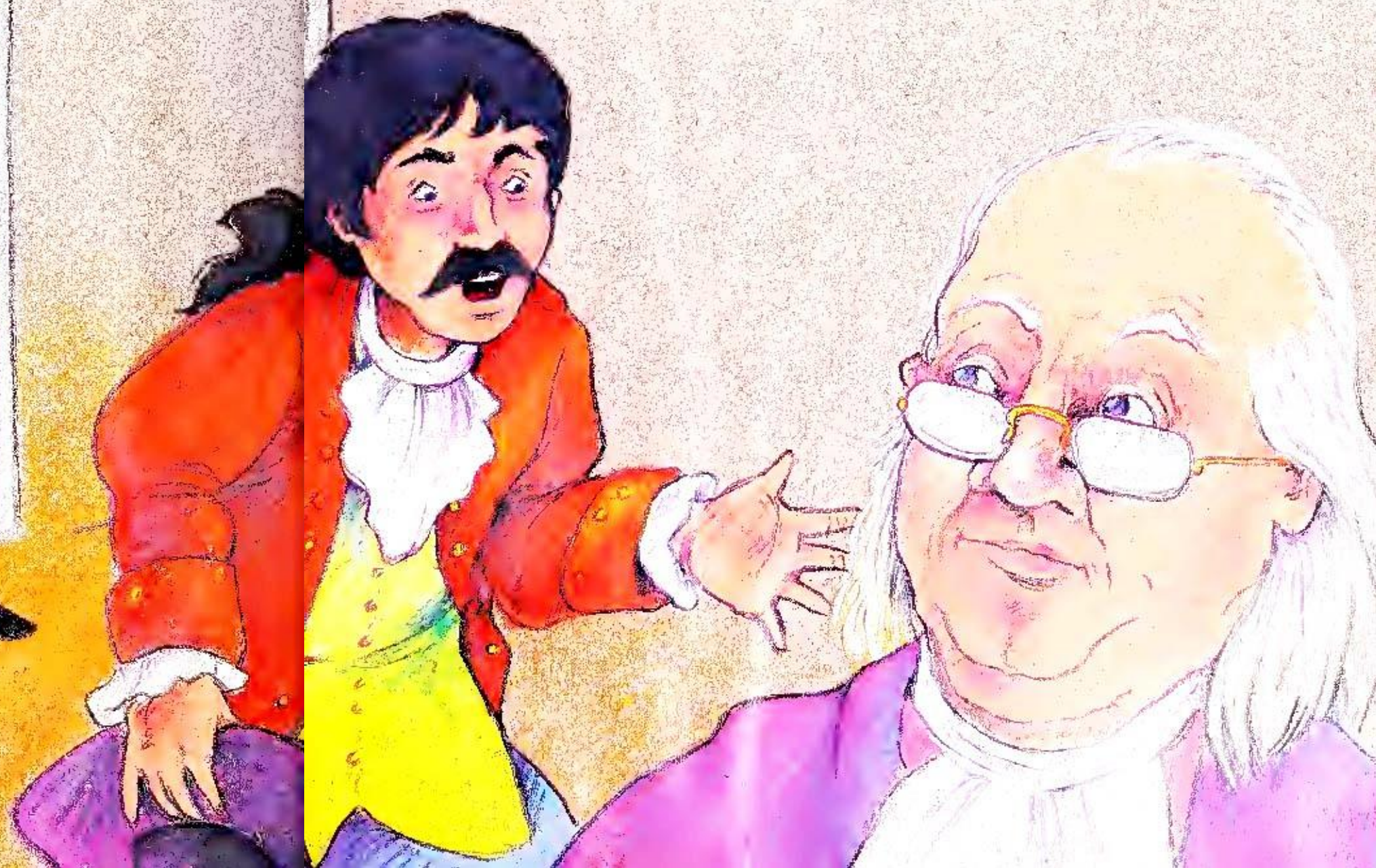
कासिमिर पुलास्की मई 1777 में अमेरिका के लिए रवाना हुए. वहां पहुँचने के बाद वो जॉर्ज वाशिंगटन से मिलने गए. जनरल वाशिंगटन अमेरिकी सैनिकों के कमांडर थे.

कासिमिर ने युद्ध लड़ने के बारे में उनसे अपने विचार साझा किये. कासिमिर को यकीन था कि वो घोड़ों पर सवार सैनिक अमेरिकियों की मदद कर सकते थे. वाशिंगटन, कासिमिर से सहमत हुए.
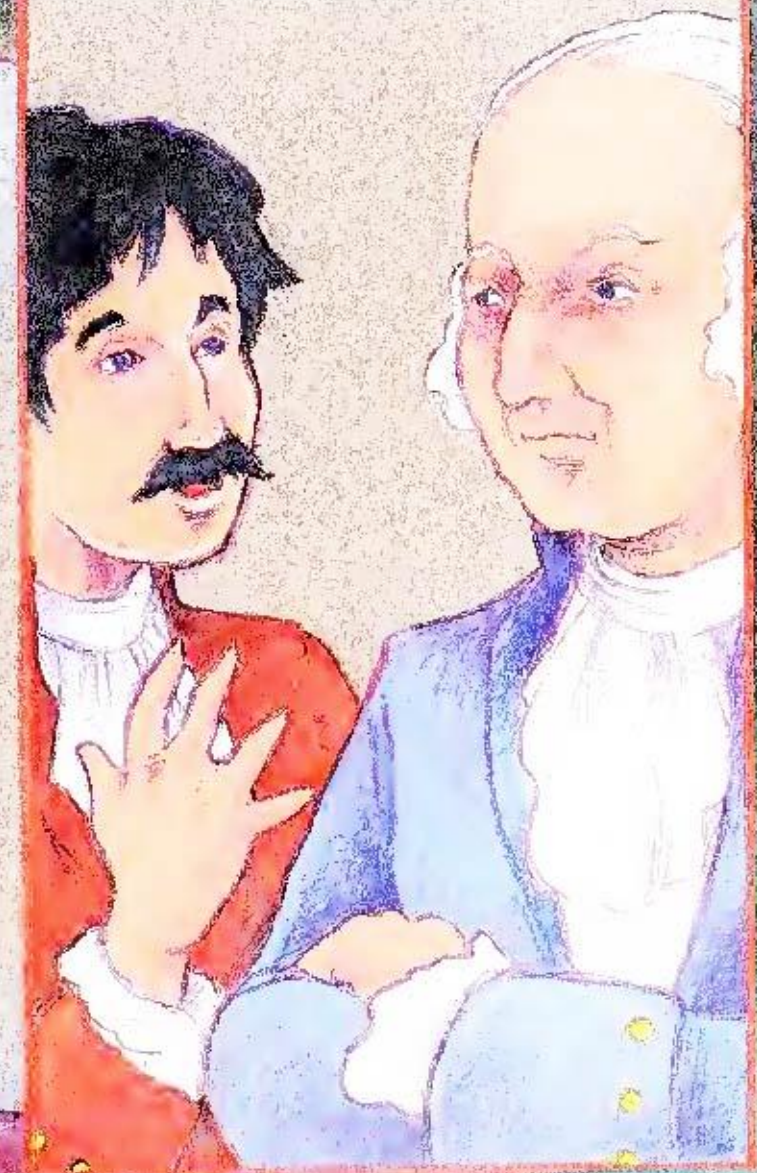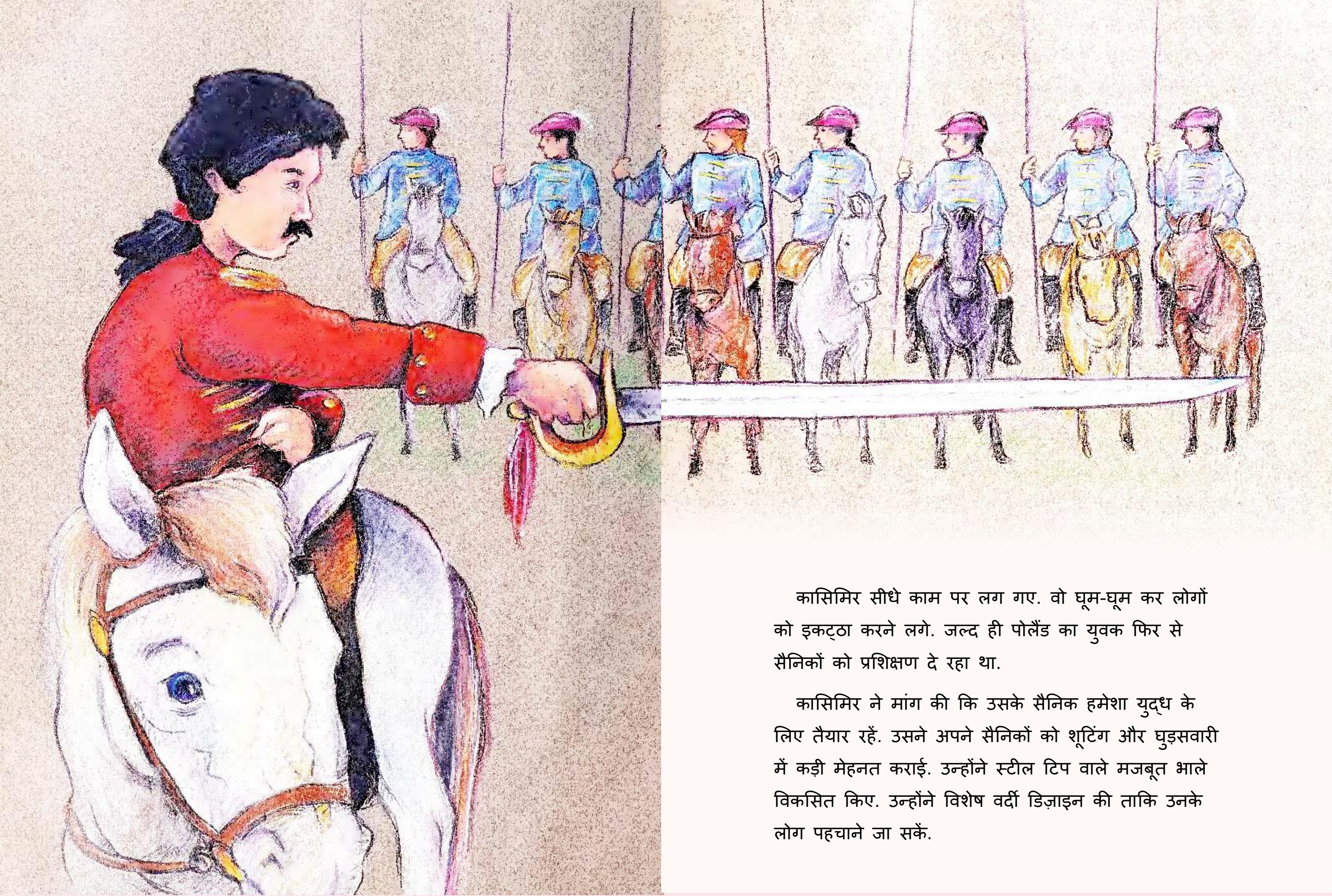
कासिमिर सीधे काम पर लग गए. वो घूम-घूम कर लोगों को इकट्ठा करने लगे. जल्द ही पोलैंड का युवक फिर से सैनिकों को प्रशिक्षण दे रहा था.

कासिमिर ने मांग की कि उसके सैनिक हमेशा युद्ध के लिए तैयार रहें. उसने अपने सैनिकों को शूटिंग और घुड़सवारी में कड़ी मेहनत कराई. उन्होंने स्टील टिप वाले मजबूत भाले विकसित किए. उन्होंने विशेष वर्दी डिज़ाइन की ताकि उनके लोग पहचाने जा सकें.

शीघ्र ही कासिमिर ने अपनी घुड़सवार सेना को युद्ध में उतारा. उन्होंने तुरंत कई आश्चर्यजनक हमले किये. उन्होंने कई ब्रिटिश सैनिकों को पकड़ लिया.

रात के अंधेरे में कासिमिर की घुड़सवार सेना हमला करती थी. वे घने जंगलों और खुले मैदानों में भी हमला करते थे. "चार्ज!" यह शब्द कासिमिर और उसके सैनिक अच्छी तरह से जानते थे. उन्होंने दुश्मन सैनिकों पर ज़ोरदार हमला किया.
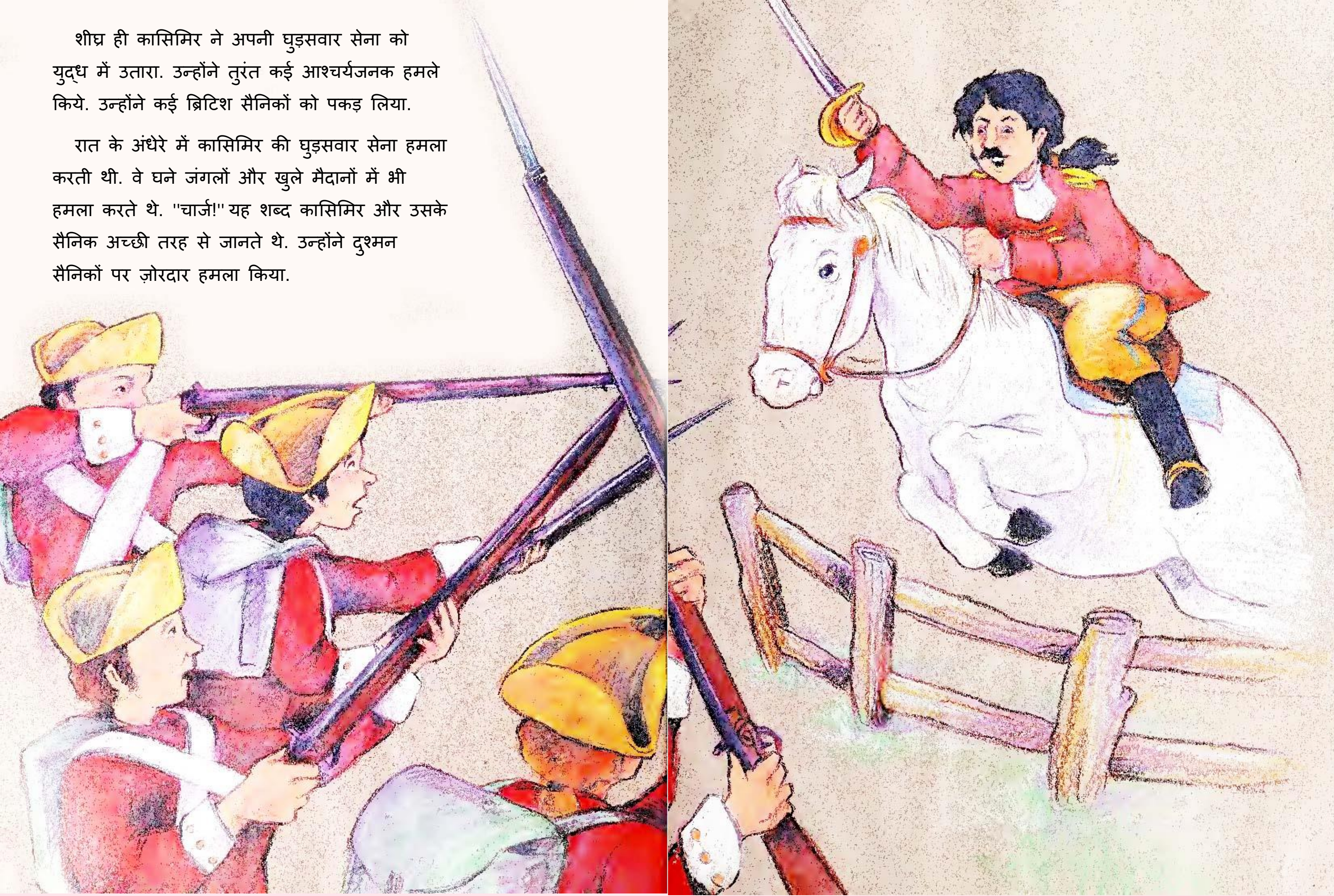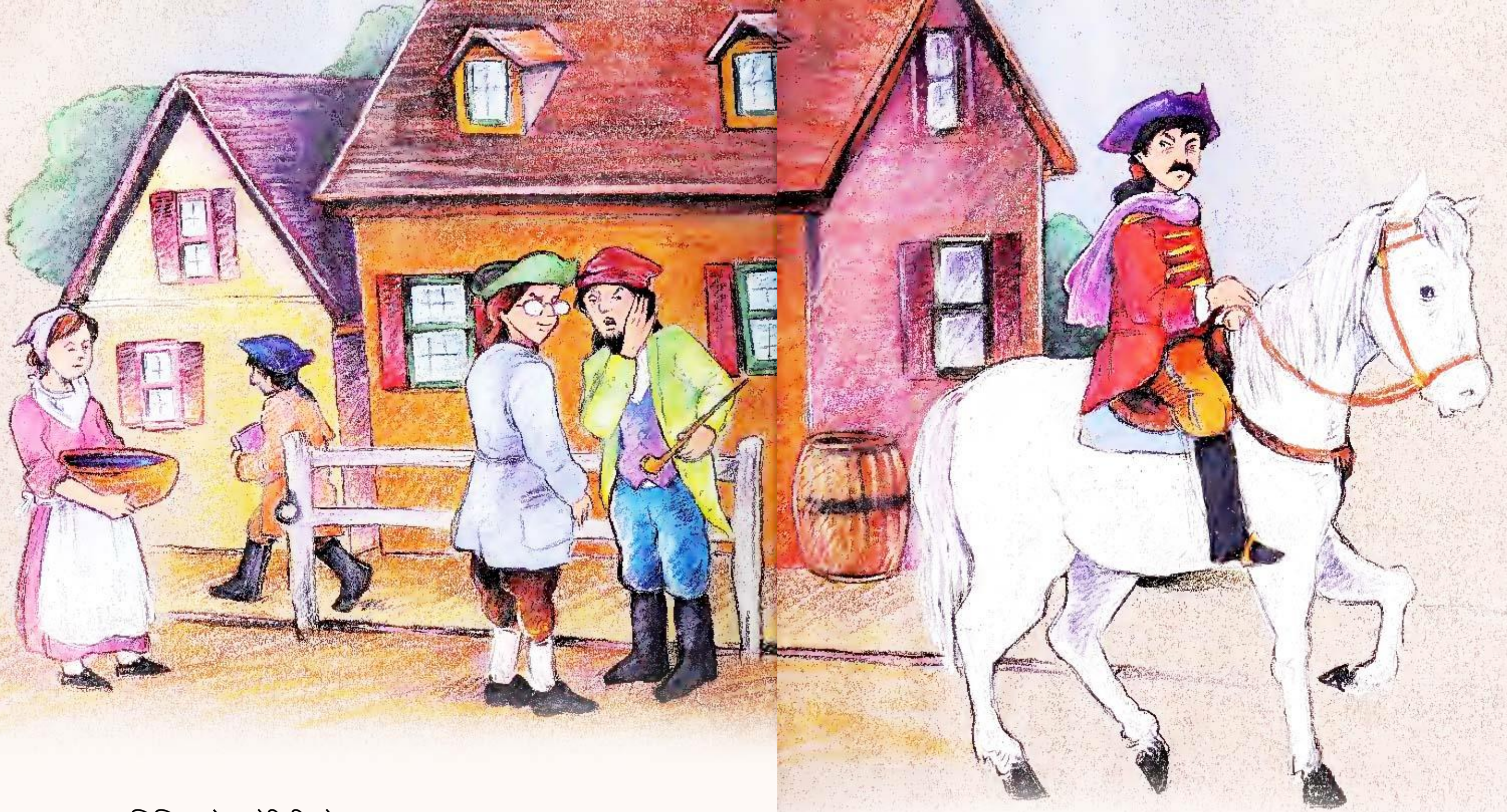
कासिमिर को अमेरिकी सेना का जनरल बनाया गया. जनरल वाशिंगटन खुश थे कि पुलास्की लड़ाई में शामिल हुए थे. पोलैंड के सैनिक ने कई लड़ाइयाँ जीतने में अमरीकियों की मदद की.

लेकिन कासिमिर सभी लोगों को पसंद नहीं आए. उन्होंने अमेरिकी किसानों से सप्लाई और घोड़े लिए. उन्होंने कहा, "मुझे अपने सैनिकों के लिए उनकी ज़रूरत है."

दूसरों ने शिकायत की कि पुलास्की दूसरे देश से आए थे. "वो हमारी भाषा तक नहीं बोलता है," कुछ लोग बड़बड़ाए. कासिमिर ने शिकायतें न सुनने का नाटक किया. उन्हें अभी कई महत्वपूर्ण काम करने बाकी थे.
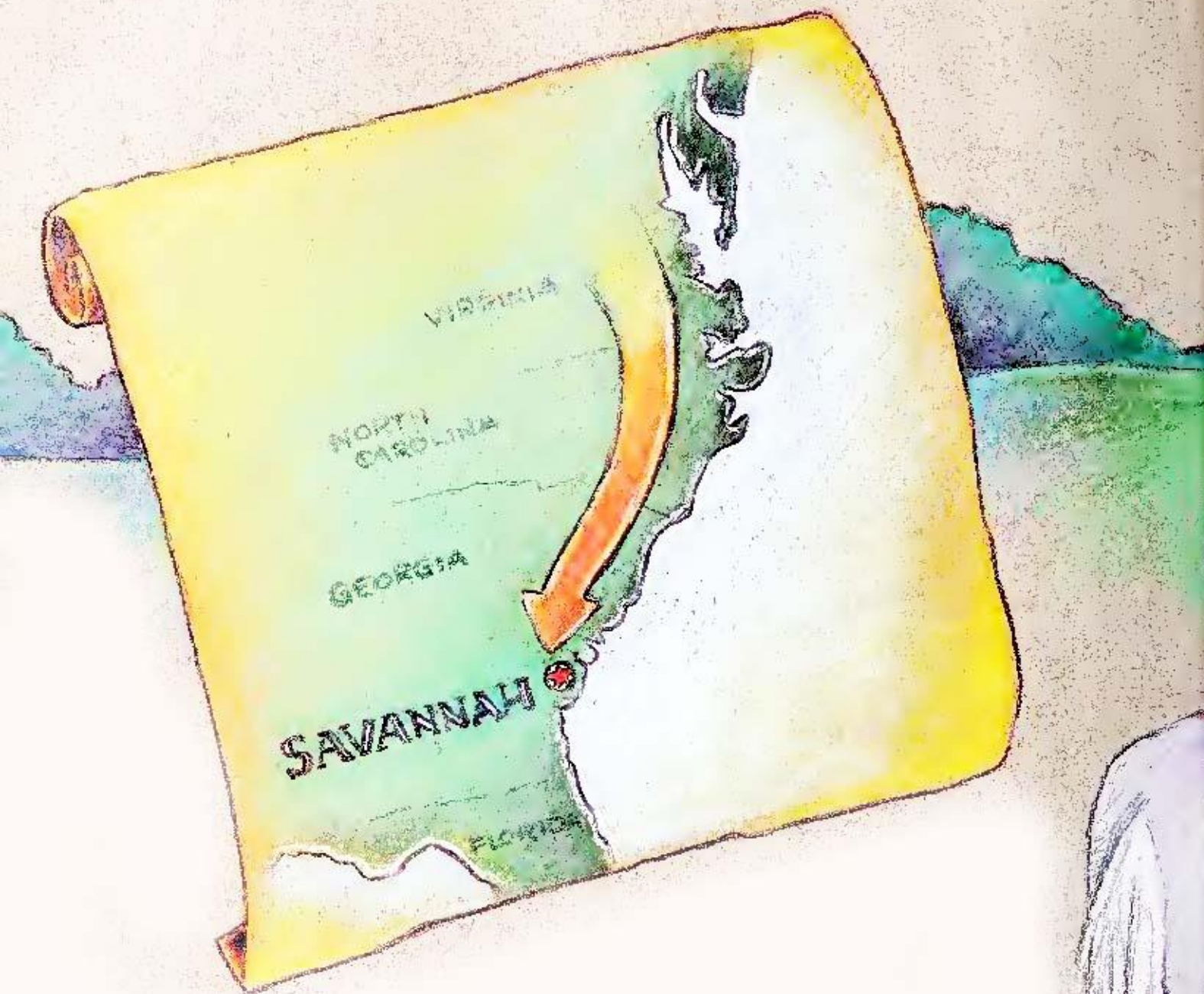
अमेरिकियों ने अधिक से अधिक लड़ाइयाँ जीतीं. कासिमिर की घुड़सवार सेना ने अधिक ब्रिटिश सैनिकों और रसद पर कब्ज़ा किया. उन्होंने ब्रिटिश सैनिकों को दक्षिण में खदेड़ दिया.

1779 के अंत तक, अमेरिकी युद्ध की कमान संभाल रहे थे. कासिमिर पुलास्की ने अपने सैनिकों को सवाना, जॉर्जिया तक पहुंचाया. वे एक ब्रिटिश शिविर के पास पहुंचे. "चार्ज!" कासिमिर चिल्लाए.
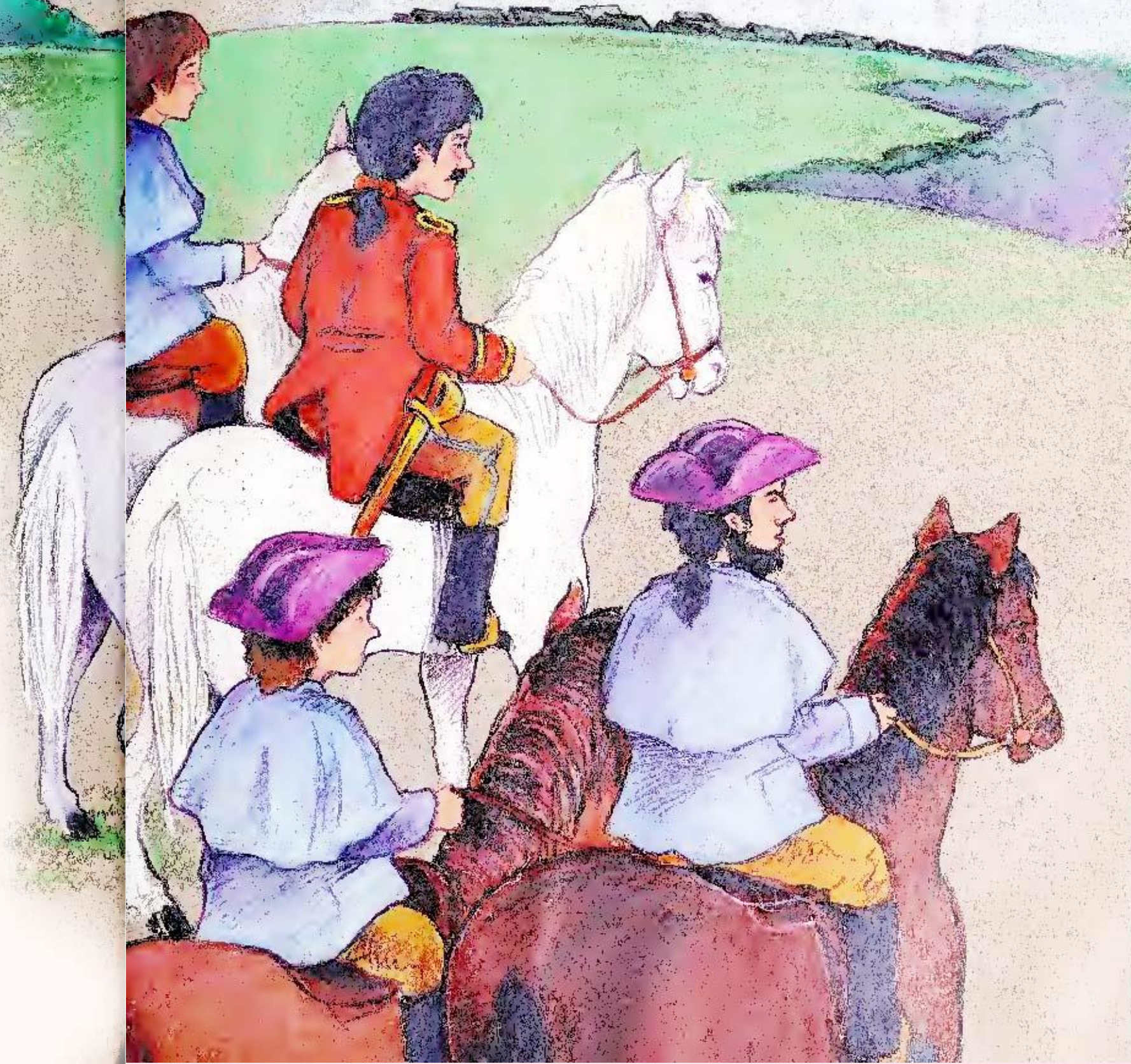
कासिमिर की घुड़सवार सेना आगे बढ़ी. हर जगह गोलियाँ चल रही थीं. उनमें से दो गोलियाँ कासिमिर को लगीं.

कासिमिर के सैनिक उन्हें पास के एक जहाज़ पर ले गये. डॉक्टरों ने उनका ऑपरेशन किया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. 14 अक्टूबर, 1779 को कासिमिर पुलास्की की मृत्यु हो गई. वो सिर्फ बत्तीस साल के थे.
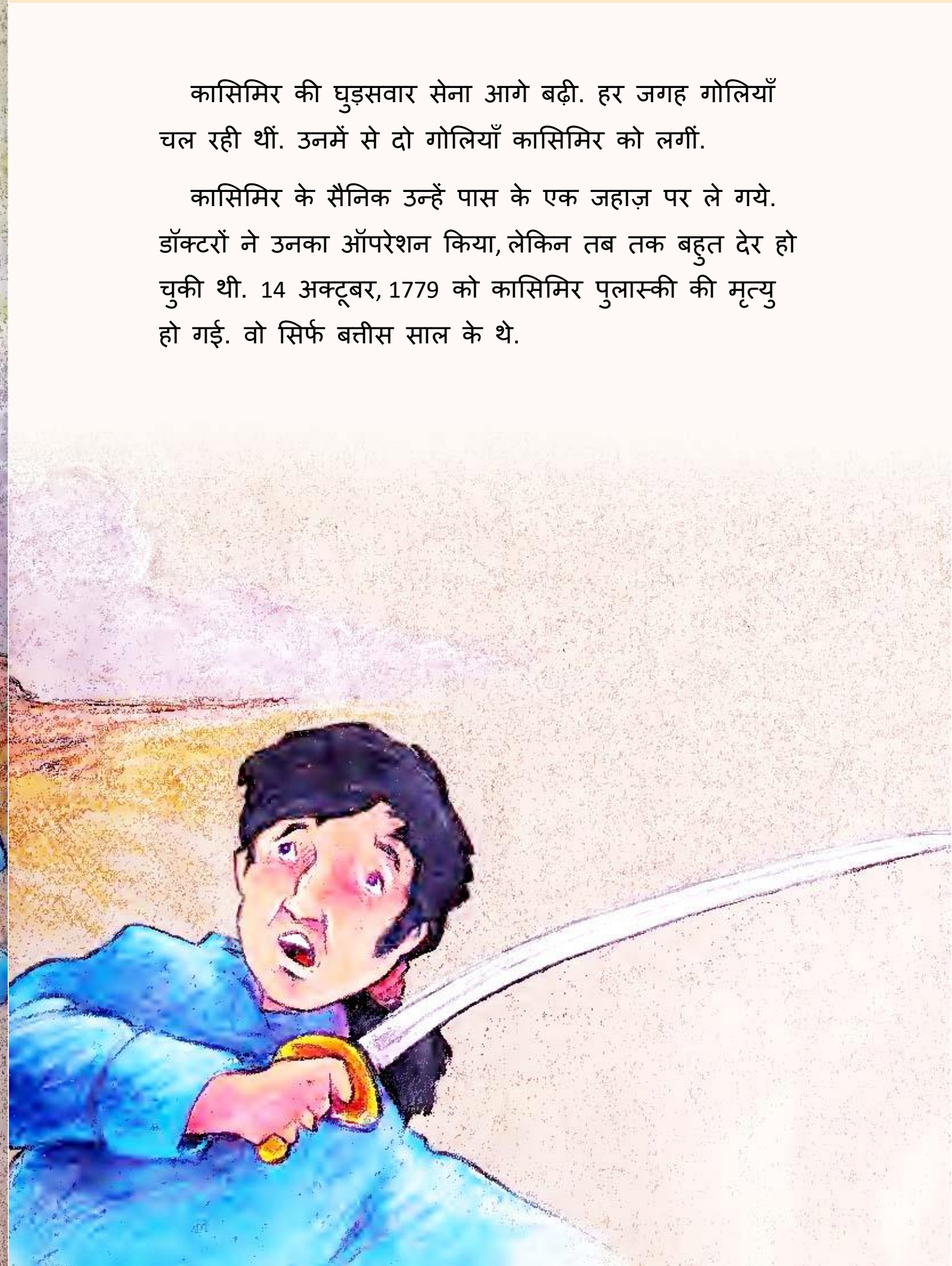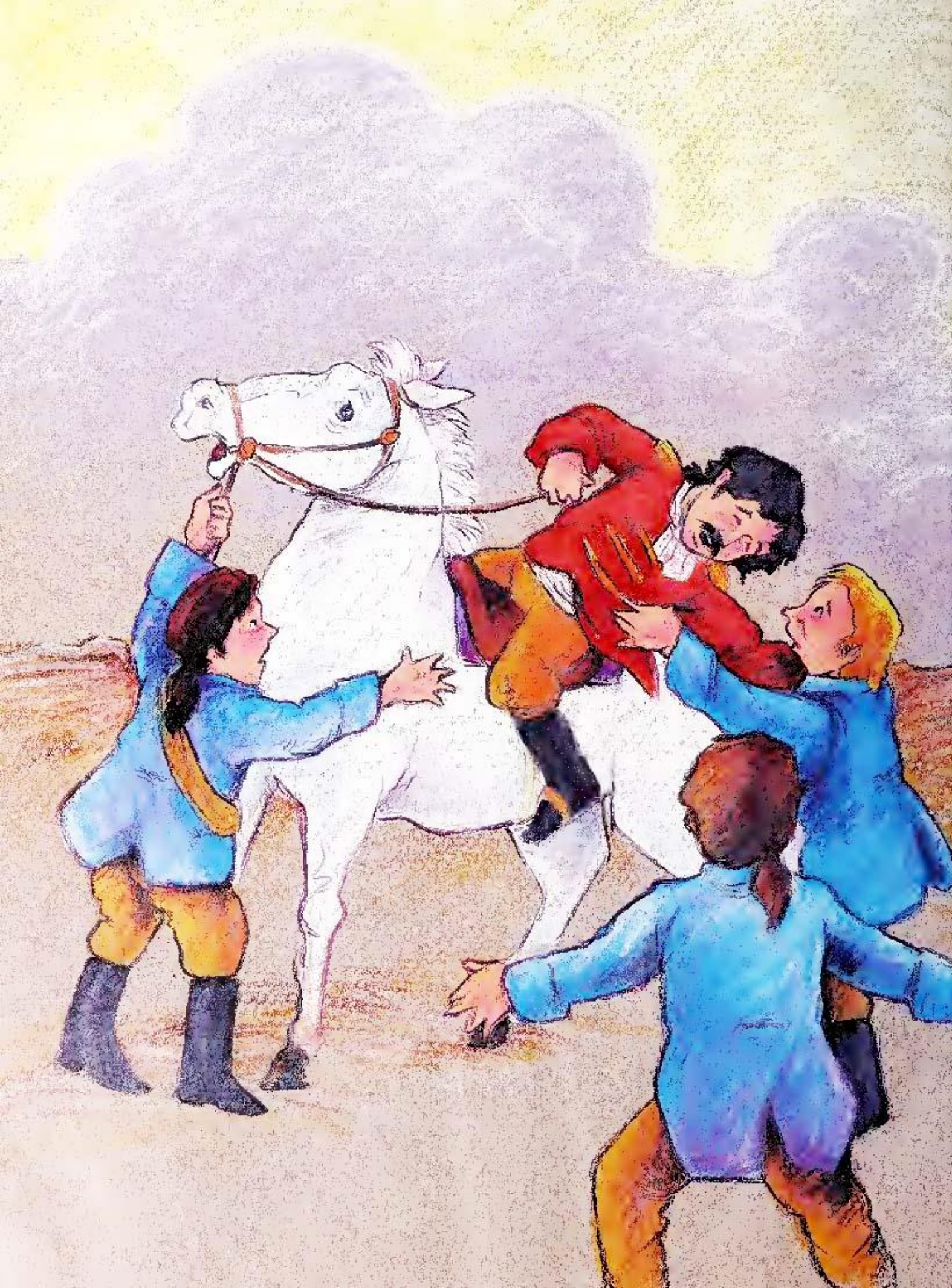
जनरल जॉर्ज वाशिंगटन ने कहा, "कासिमिर पुलास्की एक सच्चे हीरो थे. उन्होंने अपने देश के लिए अपनी जान नहीं दी. उन्होंने आजादी के लिए अपनी जान दी."